JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मालती जोशी की कहानियों में मध्यवर्गीय स्त्री

१. जोशी मालती- दस प्रतिनिधि कहानियों- किताब घरए नयी दिल्ली।

१. जोशी मालती- समर्पण का सुख- वाणी प्रकाशनए नयी दिल्ली

३ए कुमार राधा- स्त्री संघर्ष का इतिहास - वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

४ए शर्मा नासिरा - औरत के लिए औरत - सहायक प्रकाशन, नयी दिल्ली

नारी की समस्याओं को केन्द्र में रखकर साहित्य की आलोचना बीरावीं शदी के उत्तर्राध में ही जोर पकड़ी है। अनादी काल से नारी मानवता के इतिहास की प्रधान नायिका है। उसके साथ मानवता के इतिहास की प्रधान नायिका है। उसके साच मानवता हँसी और रोई है। विस्व का इतिहास उसको केन्द्र में रखकर फैलता रहा। आज नारी श्मानवीश बनने को माँग कर रही है। वह पुरुषों के समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है। नारी अपनी सारी सत्ता के साथ नारी है और उसका निर्णयए उसकी कमजोरी और उसकी शक्ति उसकी अपनी है।

१९६० के आसपास नारी वादी विचारधारा में उग्रता आने के साथ-साथ १९७५ में अंतराष्ट्रीय महिला वर्ष मनाया गया। नारी की स्थिती पर विशेष चिन्तन की शुरुआत हुई। नारी मुक्ति आन्दोलन में नारी के प्रति होनेवाला शोषण अन्याय और छल के विरुध्द स्त्री को सजग करने के प्रयत्न हुए। इस दिशा में कई साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई। जिसमें कई पुराने मुद्देए जैसे नारी को मुक्तिए स्वच्छन्दताए अस्मिताए शिक्षाए जीविकाए अधिकार आदि नई जटिलताओं के साथ सामने आए। जिसके परिणाम स्वरूप २००१ को महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषीत किया गया।

स्त्री विमर्श का सवाल आज सिर्फ साहित्य का ही सवाल नहीं वरन् समाज के सामाजिक सरोकार से जुड़ गया है। दमन और शोषण के पुरुष प्रधान समाज में अगर साहित्य और समाज में स्त्री विमर्श करनी है तो प्रथमतः लिंग भेद और स्त्री भेद में अंतर करना पड़ेगा। पुरुष और स्त्री के बीच कुछ मौलिक आधारभुत भित्रता हैए पर सवाल तो नारी शोषण की मानसिकता को मिटाकर समरस न्यायपूर्ण तथा स्थापना करना है। नैतिकताए मर्यादाए धर्मए संस्कृतिए परम्परा इतिहास उसकी स्वच्छन्दता में रोडे न अटकाते हों । आज स्त्री आन्दोलन के ऊपर खतरे मंडरा रहे हैं। स्त्री अस्मिता स्वतन्त्रता स्त्री देह तथा मन पर पुरुष का वर्चस्व है। इसीलिए नारी जबतक अपने आप को पितृसतात्मक संस्कारों से मुक्त नहीं करेगी तबतक नारी विमर्श अर्थहीन रहेगा।

आधुनिक समय में स्त्री विमर्श का प्रतिफलन कथा साहित्य के क्षेत्र में एक विशेष उपलब्धि रही है। पिछले कुछ समय से मैं स्त्री विमर्श को विभित्र पुस्तकों और पत्रिकाओं के माध्यम से समझने का प्रयास कर रही हूँ। मुझे लगता है पुरुष लेखकों की तुलना में नारी लेखिकाएँ ही नारी के अन्तर्मन को अधिक समझती हैं उनकी रचनाएँ अधिक प्रमाणिक हैं। क्योंकि वे अनुभव की उपज है जबकि पुरुष लेखक अनुमान का साहारा लेते हैं। पिछले कई वर्षों से हिंदी लेखिकाओं ने स्त्री के बुनियादी प्रश्नों को पुरी तन्मयता के साथ अपनी कृतिओं में उठाया है। इन्हीं में से एक है मालती जोशी जो की प्रमुख महिला कथाकारों की श्रेणी में आती हैं। जिन्होंने स्त्री विमर्श की सोच को विभिन्न आयामों में देखा है। उच्चवर्गीय और निम्नवर्गीय नारियों की तुलना में समाज में मध्यवर्गीय नारी की विशिष्ट भूमिका है क्योंकि मध्यवर्ग समाज का विशेष बौधिक और सचेतन वर्ग होने के कारण उसे समाज का विधि- निषेधए नैतिकता-अनैतिकताए पाप-पुण्यए भला-बुरा आदि की ज्यादा चिंता बनी रहती है। पाषाण युगए यशोदा माँए पिताए तुम मेरी लाज राखो हरिए समर्पण का सुखए अ-समय आदि कहानियों में मध्यवर्गीय नारी की कुंठाए संत्रासए संघर्ष और शोषण का स्वर मुखर है। भारतीय नारी आज संक्रमण काल से गुजर रही है। उसका एक पांव घर से बाहर निकला हुआ हैए लेकिन दूसरा रसोई की चौखट के अंदर है। शिक्षा ने उसके क्षितिज को विस्तार दियाए लेकिन घर-परिवार की लक्ष्मण रेखा वह अब भी नहीं लांघ पाई। जिससे वह तनावग्रस्त हो जाती है। उनकी अभिव्यक्ति स्त्री की लिजलिजीए भावुक और निरीह नहीं वरन् उसके विश्वासए साहसए आत्मविश्वास और जीवन्तता को व्यक्त करती है। वे नारी के अस्तित्वए अस्मिता तथा स्वतन्त्रताकी पक्षधर है। उनकी कहानीयाँ वर्तमान समाज में

पनपता व्यक्तिवाद और पाशचात्य संस्कृति के प्रभाव से बढ़ते भौतिकवादी एवं सुविधाभोगी जीवन दृष्टि पर कुठरापात है। उनके पात्र पहले उनसे टकराते हैं फिर कहानी में प्रवेश पाते हैं। उनकी कहानियाँ उनके अनुभवों का रेखाचित्र है। जीवन के प्रति साकारात्मक दृष्टिकोण उनके कहानी को आधुनिक जीवन से पीड़ित मोहग्रस्तए तनावग्रस्तए द्वन्दग्रस्त हृदय में आशा की किरणे बिखेर देती हैं। लेखन के प्रति संपूर्ण निष्ठाए आत्मीयताए सादगीए संजीदगी तथा कभी न मिटने बाली सत्य को तलाश उनके व्यक्तित्व के उज्ज्वल रूप है। मालती जोशी ने आधुनिक युग में मध्यवर्गीय स्त्री विमर्श के सवाल को संपूर्ण यथार्थता के साथ अभिव्यक्ति दी है। लेखिका का व्यक्तित्व एवं परिवेशए रचना के प्रेरणास्रोत हैं। रचना एवं रचनाकार की सामाजिकए आर्थिकए राजनैतिक एंव सांस्कृतिक पृष्ठभूमि स्त्री को मध्यवर्गीय स्त्री चेतना को समझने में सहायक सिध्द होती है।